NAAC ACCREDITED "B++" (CGPA 2.89)

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya

Jagannathpur, Dhurwa, Ranchi-834004

www.ysmranchi.net

ysmranchi4@gmail.com

Course :SEM-1 MN-1 A

(NEP)

Lesson: संगम-युगीन राजनेतिक इतिहास

By : Dr. Amrita Dutta

Lecture No. 74

© All Copyrights are Reserved

This Video is an Intellectual Property of Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, Dhurwa, Ranchi, Jharkhand

Yogoda Satsanga Mahavidyalaya, located in Dhurwa, Ranchi, Jharkhand, holds the intellectual property rights for this video.

संगम युग (संगमकाल)

MOZHIPEYAR DESAM
Chennai
Kanchi
TONDAINAD
ARAVANAD
ERUMAINAD
Kasaragodu
KONKANAM
Ezhil Malai
Chellur
Pazhi
KUTIRAKALA
TAGADUR
KOLLIMALAI
NILAGIRI
SITANAD
PUZHINAD
PUNNAD
KARKANAD
KONGUNAD
PUNANAD
CHOLAS
Kaverippattanam
Tondi
Karuvur
Uraiyur
Nagappattanam
Venni
KUDANAD
PARAMBUMALAI
PANTINAD
Vanchi?
Mudiri
CHERAS
Madurai
KUTTANAD
AYKKUDI
Arabian sea

संगम-साहित्य से हमें मिल प्रदेश के तौर राज्यों- बोल, चेर तथा पाण्ड्य का विवरण प्राप्त होता है।

उत्तर-पूर्व में चिम में चेर तथा दक्षिण-पूर्व में पाण्ड्यों का राज्य स्थित था। तीनों राज्यों के पारस्परिक सम्बन्धों के विषय में हम संगम साहित्य से ही जानते हैं।

तत्कालीन तमिल देश की राजनीति में इन्हीं तीन राज्यों का बोलबाला था।

चोल-राज्य

संगम युगीन राज्यों में सर्वाधिक शक्तिशाली बोलों का राज्य था। यह पेजार तथा दक्षिणी वेल्लारु नदियों के बीच के स्थित था। इसके अन्तर्गत भिजूर, उत्तरी अर्काट, मद्रास से चिंगलपुत्त तकः का भाग, दक्षिणी अर्काट, तंजौर, त्रिचनापलक बाग काल का सबसे प्रथम एवं महत्वपूर्ण शासक करिकाल है।

उसके प्रारम्भिक जौवन के क्षेत्र सूचना मिलती है उसके अनुसार उसका बचपन बड़ी कठिनाई से बीतो। बचपन में उसका पैर जल गया का सम्मिलित तथा बाद में चलकर वह अपने शत्रुओं द्वारा बन्दी बना कर कारागार में डाल दिया गया।

इस प्रकार उसका पैतृक राज्य मी उससे छिन गया। किन्तु करिकाल बड़ा बीर तथा हिम्मती था।

करिकाल की उपलब्धियों का अत्यन्त अतिश्योक्तिपूर्ण विवरण हमें प्राप्त होता है। बताया गया है कि उसने हिमालय तक सैनिक अभियान किया तथा कढ़, मगध और अवन्ति राज्यों को जोत लिया।

इसी प्रकार कछ अनश्रुतियों में उसकी सिंहल विजय का वृत्तान्त मिलता है। बताया गया है कि करिकाल ने सिंहल से 12000 युद्ध बन्दियों को लाकर पुहार के समद्री बन्दरगाह के निर्माण में लगा दिया था।

किन्तु इस प्रकार के विवरण काल्पनिक प्रतीत होते हैं तथा इन्हें पुष्ट करने के लिये हमारे पास कोई प्रमाण नहीं है

करिकाल के पश्चात् चोलों की शक्ति निर्बल पड़ने लगी। उसके तीन पुत्र थे- नलंगिल्ली, नेडुमुदुक्किलि तथा मावलत्तान।

इनमें नलंगिल्ली के सम्बन्ध में हमें कुछ पता है। ऐसा लगता कि इस समय चोल वंश दो शाखाओं में विभक्त हो गया।

नलगिल्ली ने करिकाल के तमिल राज्य पर शासन किया। उसकी एक प्रतिद्वन्दी शाखा नेडुनगिल्ली के अधीन चौल भत्ता का उत्धार हुआ।

आदर के दो पुत्र थे-कलंगाय नरमुच्छिर तथा तुइन अधिक महत्वपूर्ण है। यह 180 ई0 के लगभग राजा बना। उसके यश का गान संगमी युन के सुप्रसिद्ध कवि परचर ने किया है।

वह एक और योद्धा तथा कुशल सेनानायक था। उसके पास घोड़े, हाथी तथा नौनिक बेड़ा भी था। उसने अधि की उपाधि ग्रहण की थी। उसने पूर्वी तथा पश्चिमी समुद्र के बीच अपना राज्य विस्तृत किया। वह साहित्य और कला का उदार संरक्षक था।

उसने 'पत्तिनी' नामक धार्मिक सम्प्रदाय को साज में प्रतिष्ठित किया। इसमें पवित्र पलिनी की देवी के रूप में पूर्ति बराकर पूजा जाता था। बताया गया है कि सेरगुट्टवन ने इस मूर्ति का पत्थर किसी आर्य राजा को मुद्ध में हराकर प्रभात किया तथा गंगा नदी में स्नान कराने के बाद उसे अपनी राजधानी ते आया था।

चेरवंश की मुख्य शाखा में सेरगट्टवन का पुत्र पेरुञ्जीरल इरुमपौर (लग 1901) शासक बना। वह महान् विजेता था।

उसके विरुद्ध सामन्त अडिगेमार नै चोल तथा पाण्ड्य राजाओं को मिलाकर एक मोर्चा तैयार किया। किन्तु इरुमपौर ने अकेले ही तीनों को पराजित कर दिया तथा तगदूर रामक किले पर अपस अधिकार जमा लिया।

बाद में अडिनेमान उसका मित्र बन गया। चेरवंश का अगला राजा कड़ो इलंजीराल इरुमपर हुआ।

पाण्ड्य-राज्य

संगम युग का तीसरा राज्य पाण्ड्यों का था जो कावेरी के दक्षिण में स्थित था। इसमें आधुनिक मदुरा तथा तिजेवल्ली के जिले और त्रावणकोर का कुछ भाग शामिल था। इसको राजधानी मदुरा में थी।

संगम साहित्य में पाण्ड्य राजाओं का जो विवरण प्राप्त होता है वह अत्यन्त भ्रामक है तथा उसके आधार पर हम उनके इतिहास का क्रमबद्ध विवरण नहीं जान सकते।

THANK YOU!